Aapka Faisla Dt. 04-09-2026

दफ्तर से निकलकर सीधे स्कूलों में पहुंचे शिक्षा बोर्ड अध्यक्ष डॉ. राजेश शर्मा, छात्रों और शिक्षकों से जाना जमीनी हाल

धर्मशाला, (आपका फैसला)। हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड की कार्यप्रणाली को और अधिक प्रभावी व छात्र-केंद्रित बनाने के लिए बोर्ड अध्यक्ष डॉ. राजेश शर्मा अब सीधे एक्शन मोड में आ गए हैं। दफ्तरों में बैठकर नीतियां

नगरोटा बगवां के विद्यालयों का किया दौरा

कहा- बंद कमरों में बैठकर नहीं, फील्ड में जाकर ही समझी जा सकती है शिक्षा की वास्तविक तस्वीर

बनाने की पारंपरिक शैली को दरकिनार करते हुए, उन्होंने शिक्षा और परीक्षा व्यवस्था की जमीनी हकीकत जानने के लिए सीधे स्कूलों का रुख किया है। इसी कड़ी में डॉ. शर्मा ने नगरोटा बगवां के विद्यालयों का दौरा कर विद्यार्थियों और शिक्षकों से सीधा संवाद स्थापित किया और व्यवस्था में सुधार के लिए उनसे बेबाक फीडबैक लिया। बोर्ड अध्यक्ष ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय (बाल), नगरोटा बगवां तथा ग्रीन लैंड सीनियर सेकेंडरी स्कूल का विस्तृत दौरा

किया। इस दौरान उन्होंने विद्यार्थियों के बीच जाकर उनकी पढ़ाई, आगामी बोर्ड परीक्षाओं की तैयारियों और उन्हें पेश आ रही कठिनाइयों पर खुलकर चर्चा की। डॉ. शर्मा ने छात्रों की समस्याओं और अपेक्षाओं को ध्यानपूर्वक सुनते हुए स्पष्ट किया कि भविष्य में बोर्ड के हर निर्णय और व्यवस्था के केंद्र में केवल विद्यार्थी ही होंगे। उन्होंने छात्रों का हौसला बढ़ाते हुए उन्हें पूरे आत्मविश्वास के साथ पढ़ाई करने के लिए प्रेरित किया। शिक्षकों के फीडबैक से सुधरेगी मूल्यांकन व्यवस्था, विद्यार्थियों के साथ-साथ डॉ. शर्मा ने शिक्षकों के साथ भी अहम बैठक की। उन्होंने परीक्षा के संचालन, उत्तर पुस्तिकाओं की मूल्यांकन व्यवस्था, पाठ्यक्रम से जुड़े विषयों और स्कूल स्तर पर आ रही व्यावहारिक समस्याओं की विस्तार से जानकारी ली। शिक्षकों को संबोधित करते हुए बोर्ड अध्यक्ष ने कहा कि शिक्षा का असल ढांचा शिक्षक ही तैयार करते हैं, इसलिए उनके अनुभव और सुझाव बोर्ड के लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं। इन्हीं सुझावों के आधार पर वर्तमान व्यवस्था की खामियों को दूर किया जाएगा। अपने इस दौरे का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए डॉ. राजेश शर्मा ने कहा, शिक्षा व्यवस्था की वास्तविक तस्वीर कार्यालय में बैठकर नहीं, बल्कि विद्यालयों में पहुंचकर ही समझी जा सकती है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि यह दौरा कोई औपचारिकता या रूटीन निरीक्षण नहीं है, बल्कि बोर्ड की नीतियों को जमीनी स्तर पर लागू करने में आ रही चुनौतियों को समझने का एक माध्यम है। इस जमीनी फीडबैक के जरिए हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड को भविष्य में अधिक पारदर्शी, जवाबदेह और संवेदनशील बनाने की दिशा में काम किया जाएगा। शिक्षा जगत के जानकारों का मानना है कि बोर्ड अध्यक्ष द्वारा स्कूलों और बोर्ड के बीच सीधा संवाद स्थापित करने की यह पहल शिक्षा प्रणाली में दूरगामी और सकारात्मक बदलाव लाएगी।

Amar Ujala Dt. 04-09-2026

बोर्ड अध्यक्ष ने जाना शिक्षा का हाल

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. राजेश शर्मा ने वीरवार को नगरोटा बगवां के विभिन्न विद्यालयों का दौरा किया। यहां विद्यार्थियों और शिक्षकों से सीधा संवाद कर पढ़ाई, बोर्ड परीक्षाओं और मूल्यांकन व्यवस्था से जुड़ी समस्याओं की जानकारी ली।

डॉ. शर्मा ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय (बाल) नगरोटा बगवां और ग्रीनलैंड सीनियर सेकेंडरी स्कूल का दौरा किया। उन्होंने कक्षाओं में विद्यार्थियों से बातचीत कर पढ़ाई की स्थिति, आगामी बोर्ड परीक्षाओं की तैयारियों और सामने आ रही दिक्कतों के बारे में पूछा।

छात्रों ने भी अपनी समस्याएं और अपेक्षाएं बोर्ड अध्यक्ष के सामने रखीं। उन्होंने विद्यार्थियों को आत्मविश्वास के साथ परीक्षा की तैयारी करने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान उन्होंने शिक्षकों की समस्याएं भी सुनीं। ब्यूरो

डिजिटल अख़बार
पहली नजर
सबसे पहले, सबसे तेज
आज की ताजा ख़बर देखते रहिए
डिजिटल न्यूज पेपर पहली नजर के साथ
03 सितंबर, 2026 www.pehalinazar.com pehalinazarhp@gmail.com

दफ्तर से निकलकर सीधे स्कूलों में पहुंचे शिक्षा बोर्ड अध्यक्ष डॉ. राजेश शर्मा

छात्रों और शिक्षकों से जाना जमीनी हाल

नगरोटा बगवां के विद्यालयों का किया दौरा

कहा-बंद कमरों में बैठकर नहीं, फील्ड में जाकर ही समझी जा सकती है शिक्षा की वास्तविक तस्वीर

पहली नजर ब्यूरो, धर्मशाला

हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड की कार्यप्रणाली को और अधिक प्रभावी व छात्र-केंद्रित बनाने के लिए बोर्ड अध्यक्ष डॉ. राजेश शर्मा अब सीधे एक्शन मोड में आ गए हैं। दफ्तरों में बैठकर नीतियां बनाने की पारंपरिक शैली को दरकिनार करते हुए, उन्होंने शिक्षा और परीक्षा व्यवस्था की जमीनी हकीकत जानने के लिए सीधे स्कूलों का रुख किया है। इसी कड़ी में डॉ. शर्मा ने नगरोटा बगवां के विद्यालयों का दौरा कर विद्यार्थियों और शिक्षकों से सीधा संवाद स्थापित किया और व्यवस्था में सुधार के लिए उनसे बेबाक फीडबैक लिया।

छात्रों की समस्याएं सुनीं, तैयारियों का लिया जायजा

बोर्ड अध्यक्ष ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय (बाल), नगरोटा बगवां तथा ग्रीन लैंड सीनियर सेकेंडरी स्कूल का विस्तृत दौरा किया। इस दौरान उन्होंने विद्यार्थियों के बीच जाकर उनकी पढ़ाई, आगामी बोर्ड परीक्षाओं की तैयारियों और उन्हें पेश आ रही कठिनाइयों पर खुलकर चर्चा की। डॉ. शर्मा ने छात्रों की समस्याओं और अपेक्षाओं को ध्यानपूर्वक सुनते हुए स्पष्ट किया कि भविष्य में बोर्ड के हर निर्णय और व्यवस्था के केंद्र में केवल विद्यार्थी ही होंगे। उन्होंने छात्रों का हौसला बढ़ाते हुए उन्हें पूरे आत्मविश्वास के साथ पढ़ाई करने के लिए प्रेरित किया।

शिक्षकों के फीडबैक से सुधरेगी मूल्यांकन व्यवस्था

विद्यार्थियों के साथ-साथ डॉ. शर्मा ने शिक्षकों के साथ भी अहम बैठक की। उन्होंने परीक्षा के संचालन, उत्तर पुस्तिकाओं की मूल्यांकन व्यवस्था, पाठ्यक्रम से जुड़े विषयों और स्कूल स्तर पर आ रही व्यावहारिक समस्याओं की विस्तार से जानकारी ली। शिक्षकों को संबोधित करते हुए बोर्ड अध्यक्ष ने कहा कि शिक्षा का असल ढांचा शिक्षक ही तैयार करते हैं, इसलिए उनके अनुभव और सुझाव बोर्ड के लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं। इन्हीं सुझावों के आधार पर वर्तमान व्यवस्था की खामियों को दूर किया जाएगा।

औपचारिक निरीक्षण नहीं, सुधार की है ठोस पहल

अपने इस दौरे का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए डॉ. राजेश शर्मा ने कहा, 'शिक्षा व्यवस्था की वास्तविक तस्वीर कार्यालय में बैठकर नहीं, बल्कि विद्यालयों में पहुंचकर ही समझी जा सकती है।' उन्होंने जोर देते हुए कहा कि यह दौरा कोई औपचारिकता या रूटीन निरीक्षण नहीं है, बल्कि बोर्ड की नीतियों को जमीनी स्तर पर लागू करने में आ रही चुनौतियों को समझने का एक माध्यम है।

सकारात्मक बदलाव लाएगी पहल

इस जमीनी फीडबैक के जरिए हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड को भविष्य में अधिक पारदर्शी, जवाबदेह और संवेदनशील बनाने की दिशा में काम किया जाएगा। शिक्षा जगत के जानकारों का मानना है कि बोर्ड अध्यक्ष द्वारा स्कूलों और बोर्ड के बीच सीधा संवाद स्थापित करने की यह पहल शिक्षा प्रणाली में दूरगामी और सकारात्मक बदलाव लाएगी।

Dr. Rajesh Sharma Visits Schools Directly from the Office

SANJAY AGGARWAL

DHARAMSHALA SEP 3 : To make the functioning of the Himachal Pradesh Board of School Education more effective and student-centric, Board Chairman Dr. Rajesh Sharma has shifted into direct action mode. Moving away from the traditional practice of formulating policies while seated in the office, he has visited schools directly to understand the ground realities of the education and examination systems. As part of this initiative, Dr. Sharma visited schools in Nagrota Bagwan, engaged in direct dialogue with students and teachers, and sought candid feedback to improve the system.The Board Chairman conducted detailed visits to Government Senior Secondary School (Boys), Nagrota Bagwan, and Green Land Senior Secondary School. During these visits, he interacted with students, openly discussing their studies, preparations for upcoming board exams, and the challenges they face. While attentively listening to the students' concerns and expectations, Dr. Sharma emphasized that students would remain at the core of every future decision and system implemented by the Board. He boosted the students' morale and encouraged them to study with full confidence. Alongside the students, Dr. Sharma also held a crucial meeting with the teachers. He gathered detailed information regarding the conduct of examinations, the answer-sheet evaluation process, curriculum-related matters, and practical challenges faced at the school level. Addressing the teachers, the Board Chairman stated that teachers are the ones who build the actual framework of education; therefore, their experience and suggestions are of utmost importance to the Board. He noted that the shortcomings of the current system would be addressed based on these suggestions. Explaining the objective of his visit, Dr. Rajesh Sharma said, "The true picture of the education system cannot be understood by sitting in an office, but only by visiting the schools." He emphasized that this visit was not merely a formality or a routine inspection, but a means to understand the challenges involved in implementing Board policies at the grassroots level.This ground-level feedback will pave the way for making the Himachal Pradesh Board of School Education more transparent, accountable, and responsive in the future. Experts in the field of education believe that this initiative by the Board Chairperson to establish direct communication between schools and the Board will bring about far-reaching and positive changes in the education system.

Himachal Dastak Dt. 04-09-2026

शिक्षा बोर्ड अध्यक्ष ने छात्रों-शिक्षकों से ली फीडबैक

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. राजेश शर्मा ने नगरोटा बगवां के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय (बाल) और ग्रीन लैंड सीनियर सेकेंडरी स्कूल का दौरा किया। उन्होंने छात्रों से पढ़ाई और बोर्ड परीक्षाओं की तैयारियों को लेकर चर्चा की तथा शिक्षकों से परीक्षा संचालन, मूल्यांकन और पाठ्यक्रम संबंधी समस्याओं की जानकारी ली। डॉ. शर्मा ने कहा कि शिक्षा व्यवस्था की वास्तविक तस्वीर बंद कमरों में बैठकर नहीं, बल्कि स्कूलों में जाकर ही समझी जा सकती है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों और शिक्षकों से मिले सुझावों के आधार पर बोर्ड की व्यवस्था में सुधार किया जाएगा।

SEPTEMBER 04, 2026 FRIDAY HIMACHAL PRADESH

The Sunny Times

HPBOSE INITIATES GROUND-LEVEL REVIEW OF EXAM READINESS AND TEACHER FEEDBACK

Vinay | Nurpur

Policy is no longer being drafted in an air-conditioned vacuum. In an aggressive pivot toward accountability, Dr. Rajesh Sharma, Chairman of the Himachal Pradesh Board of School Education (HPBOSE), stepped directly onto the frontlines to confront the raw ground realities of the state's education machinery.

Touring schools across Nagrota Bagwan—including the Government Senior Secondary School for Boys and Greenland Senior Secondary School—Dr. Sharma cut through the usual bureaucratic red tape to run a reality check on classrooms, upcoming board exam prep, and lingering campus bottlenecks. Sitting down directly with students, he pledged that future board policies would center exclusively on the learner's actual struggle rather than administrative convenience, pushing them to ditch fear and prep with confidence.

The classroom audit quickly shifted into a frank, no-filter session with teachers. Rather than staging a formal inspection, the board chief drilled into practical operational headaches: flawed evaluation systems, evaluation answer-sheet bottlenecks, and syllabus friction. Dr. Sharma framed educators as the real architects of the system, insisting their hands-on feedback will directly drive the overhaul of board policies and eliminate systemic loopholes.

Dismissing the visit as anything but routine paperwork, Dr. Sharma stated plainly that genuine reform cannot happen behind closed office doors. By bridging the disconnect between the board and the chalkboards, the education chief is signaling a transparent, student-first agenda aimed at delivering measurable, long-overdue system upgrades.